

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 9, ऐतिहासिक आलोचना

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

अब हम व्याख्याशास्त्र को संचार के तीन पहलुओं, लेखक और पाठ, और फिर पाठक के दृष्टिकोण से देख रहे हैं, या देखना शुरू कर रहे हैं। लेखक और ऐतिहासिक-केंद्रित दृष्टिकोण से शुरुआत करते हुए, हम अर्थ को मुख्य रूप से पाठ के पीछे, या व्याख्या के फोकस के रूप में देखते हैं, मुझे लगता है कि इसे रखने का एक बेहतर तरीका यह होगा कि व्याख्या का ध्यान पाठ के पीछे, यानी कि पर केंद्रित है। लेखक, ऐतिहासिक परिस्थितियाँ जो पाठ का निर्माण करती हैं। ऐतिहासिक आलोचना का परिचय देते समय, और वैसे, उस आलोचना को याद रखें, हम आलोचना का उपयोग विनाशकारी, आलोचनात्मक, नकारात्मक अर्थ में नहीं कर रहे हैं, बल्कि ध्वनि प्रदान करने के मामले में भोली-भाली आलोचना के विपरीत, अधिक सकारात्मक आलोचना कर रहे हैं। किसी के विश्वास के लिए तर्क, ठोस औचित्य।

जब हम ऐतिहासिक आलोचना को देखते हैं, तो पिछले सत्र में हमने इस तथ्य पर विचार किया कि ऐतिहासिक आलोचना बाइबिल की व्याख्या करने के लिए अधिक धार्मिक, परंपरा-उन्मुख दृष्टिकोण के विपरीत बाइबिल पाठ की व्याख्या करने के एक विशिष्ट तरीके के रूप में विकसित हुई। ऐतिहासिक दृष्टिकोण ने बाइबिल को एक अर्थ में ऐतिहासिक रूप से अनुकूलित पाठ के भाग के रूप में देखा। और हमने देखा कि कम से कम तीन सिद्धांत या धारणाएँ बाइबिल की व्याख्या करने के ऐतिहासिक, आलोचनात्मक दृष्टिकोण का आधार हैं।

नंबर एक, हमने बाइबिल के ग्रंथों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ, कारण और प्रभाव में जांचने में मानवीय तर्क की प्राथमिकता, मानवीय तर्क की क्षमता और सामान्य ज्ञान को देखा, यह तथ्य कि ऐतिहासिक, आलोचनात्मक दृष्टिकोण इस धारणा से आगे बढ़ा कि ऐतिहासिक घटनाएँ और ऐतिहासिक दस्तावेज इसे कारण और प्रभाव के एक बंद सातत्य के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। और फिर अंत में, सिद्धांत या सादृश्य की धारणा, कि इतिहास खुद को दोहराता है, जो ऐतिहासिक रूप से सच के रूप में स्वीकार किया जाता है, उसे आधुनिक दिन में हम जो अनुभव करते हैं उसके साथ एक सादृश्य होना चाहिए। और इसलिए, ऐतिहासिक, आलोचनात्मक पद्धति

के तहत पुराने नियम और नए नियम के दस्तावेजों की जांच इन उपरोक्त धारणाओं से आगे बढ़ी।

इसलिए, फिर से, इसकी एक शाखा यह है कि इसमें कोई अलौकिकता नहीं है, अनोखी घटनाओं के लिए कोई जगह नहीं है, पुनरुत्थान और समुद्र पार करने और मृत लोगों को जीवित करने जैसी चीजें नहीं हैं और इस तरह की चीजें नहीं हैं। इसके बजाय, उनके पास ऐसे स्पष्टीकरण होने चाहिए जो ऐतिहासिक आलोचना के साथ काम करने वाले इन सिद्धांतों के अनुरूप हों। हालाँकि, मेरा सुझाव है कि जब इन नकारात्मक और अलौकिक-विरोधी धारणाओं को अलग रखा जाए, तो पुराने और नए नियम के ऐतिहासिक दृष्टिकोण मान्य हैं और उन्होंने बाइबिल की व्याख्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

और, वास्तव में, यदि आप बाइबिल के चरित्र की हमारी समझ और प्रेरणा की हमारी समझ पर वापस जाते हैं, तो कुछ अर्थों में, पुराने और नए नियम के लिए ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण दृष्टिकोण वास्तव में आवश्यक हैं। क्योंकि हमने देखा कि पुराने और नए नियम ने इतिहास में परमेश्वर के मुक्तिदायक कार्यों को प्रकट करने, गवाही देने और रहस्योद्घाटन होने का दावा किया है। और चूँकि बाइबिल इतिहास में ईश्वर की गतिविधियों और निश्चित समय और स्थानों पर अपने लोगों के साथ उसके संबंधों को दर्ज करने का दावा करती है, इसलिए, पुराने और नए नियम को उसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ में समझना आवश्यक है।

हालाँकि, इसके साथ-साथ यह पहचानना भी महत्वपूर्ण है कि यद्यपि वे ऐतिहासिक दस्तावेजों से कम नहीं हैं, पुराने और नए नियम के ग्रंथ सिर्फ ऐतिहासिक दस्तावेजों से कहीं अधिक हैं। वे ऐतिहासिक और धार्मिक दोनों हैं। इसलिए, मैं इतिहास-धर्मशास्त्र द्वंद्व को अस्वीकार कर रहा हूँ जो उदाहरण के लिए, कांट में पाए गए कुछ द्वैतवाद पर वापस जाता है।

पुराने और नए नियम के दस्तावेज़ केवल ऐतिहासिक कृत्यों के रिकॉर्ड से कहीं अधिक हैं, बल्कि ये धार्मिक साहित्य हैं, ऐसा साहित्य है जो विश्वास की प्रतिक्रिया उत्पन्न करता रहता है। लेकिन एक ऐसा विश्वास जो इतिहास में निहित है और जिसका बचाव और प्रदर्शन किया जा सकता है।

यह ऐसा विश्वास है जो इतिहास के विपरीत या इतिहास के विपरीत नहीं है, बल्कि ऐसा विश्वास है जो इतिहास या ऐतिहासिक तर्क के विरुद्ध नहीं है, बल्कि एक ऐसा विश्वास है जो उसी में निहित है और उसी के अनुरूप है।

इसलिए, मैं एक ऐसे दृष्टिकोण की वकालत कर रहा हूँ जो नए और पुराने नियम के दस्तावेजों को उनके ऐतिहासिक परिवेश और उनके ऐतिहासिक संदर्भ में रखता है और ऐतिहासिक जांच के तरीकों का उपयोग करता है, लेकिन यहीं नहीं रुकता है और उससे कहीं अधिक है। वे ऐसे दस्तावेज हैं जो धार्मिक दस्तावेज होने का दावा करते हैं। वे दस्तावेज हैं जो इतिहास में ईश्वर के शक्तिशाली कार्यों को प्रमाणित करने का दावा करते हैं और अपने लोगों के लिए ईश्वर की इच्छा के रहस्योद्घाटन के रूप में कार्य करना जारी रखते हैं।

अब, जब हम पुराने और नए नियम के संबंध में ऐतिहासिक दृष्टिकोण के बारे में सोचते हैं, तो पुराने और नए नियम के दस्तावेजों के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को दो भागों में विभाजित करना सहायक हो सकता है। यानी, पाठ के इतिहास की जांच करना और दूसरा, पाठ में इतिहास की जांच करना। इसलिए, पाठ के इतिहास की जांच करने से पाठ के निर्माण से संबंधित प्रश्न पूछे जाएंगे।

अर्थात्, लेखक और पाठकों तथा पाठ को तैयार करने वाली ऐतिहासिक परिस्थितियों के बारे में हम क्या जान सकते हैं। पाठ में इतिहास, पाठ के भीतर ऐतिहासिक व्यक्तियों या घटनाओं या सांस्कृतिक संदर्भों या रीति-रिवाजों या ऐसी चीजों के विशिष्ट संदर्भों को संदर्भित करेगा जिनकी जांच करने की आवश्यकता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, आइए पुराने नियम के इतिहास को संक्षेप में देखें।

लेकिन फिर से, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मेरे अधिकांश उदाहरण, और विशेष रूप से वे जिन पर मैं सबसे अधिक समय बिताता हूँ, नए नियम से आएंगे क्योंकि यह अनुसंधान और लेखन और शिक्षण में मेरी रुचि का प्राथमिक क्षेत्र है। लेकिन फिर, मैं पुराने नियम के उदाहरणों से भी इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ। इसलिए, पाठ के इतिहास को देखते हुए, हम प्रश्न पूछते हैं, कुछ

पारंपरिक प्रश्न जिन्हें हम अक्सर परिचय और टिप्पणियों या बाइबिल के परिचय और सर्वेक्षणों में पाते हैं, जो कि नए या पुराने नियम की पुस्तक की ऐतिहासिक सेटिंग क्या है, कौन है, से संबंधित है। लेखक, पाठक कौन हैं, वे किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं, वे स्वयं को किस वातावरण में पाते हैं, यह सब दस्तावेज़ को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखने और यह समझने की आशा के साथ कि यह उससे कैसे विकसित होता है और उसे संबोधित करता है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि कोई यशायाह की पुस्तक पर विचार कर रहा है, तो वह लेखक के बारे में प्रश्न पूछना चाहता है और लेखक कौन था और उसकी स्थिति क्या है। कोई इस्राएलियों की स्थिति के बारे में प्रश्न पूछना चाहता है क्योंकि उन्होंने खुद को मूर्तिपूजा के कारण निर्वासन का सामना करना पड़ रहा है, उनकी पापपूर्णता के कारण, ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ रहा है जहां उन्हें वाचा को बनाए रखने से इनकार करने की सजा के रूप में एक विदेशी देश में भेजा जा सकता है भगवान ने उनके साथ जो किया था, उन्होंने कानून का पालन करने से इंकार कर दिया, और यह समझने के लिए कि यशायाह की पुस्तक, उदाहरण के लिए, उस स्थिति की प्रतिक्रिया कैसे है। या फिर, पाठ में इतिहास को देखते हुए।

हमने कहा कि पाठ में इतिहास की जांच करना बाइबिल पाठ को देखना और ऐतिहासिक व्यक्तियों, ऐतिहासिक स्थानों, ऐतिहासिक उदाहरणों, या ऐतिहासिक घटनाओं, कुछ सांस्कृतिक मूल्यों के संदर्भ, या, फिर से, कुछ ऐतिहासिक व्यक्तियों के संदर्भों के विशिष्ट संदर्भों को नोट करना है। वे स्थान जिनका प्रभाव हो सकता है, या लेखक मानता है कि पाठ को समझने के लिए उन्हें जाना जाएगा। उदाहरण के लिए, यह विशेष रूप से पुराने नियम में कथा साहित्य में प्रमुख है जहां आपको अक्सर व्यक्तियों और ऐतिहासिक घटनाओं और रीति-रिवाजों और मूल्यों या स्थानों के संदर्भ मिलते हैं। उदाहरण के लिए, रूथ की पुस्तक को कोई भी पढ़ नहीं सकता है, और पाठ में कुछ अनूठे इतिहास, ऐतिहासिक या सांस्कृतिक घटनाओं और मूल्यों और इस तरह की चीजों के संदर्भ के बिना इसे समझने की कोशिश नहीं कर सकता है।

उदाहरण के लिए, और फिर, मेरा इरादा यहां इन सबके लिए विस्तृत विवरण देना नहीं है, बल्कि केवल मुद्दों और सवालों को उठाना है। उदाहरण के लिए, रूथ द्वारा बोअज़ के पैरों को उजागर

करने के अध्याय 3 और श्लोक 4 के संदर्भ को कोई कैसे समझ सकता है? अपने पैर उघाड़ना मुहावरे का क्या मतलब है? कुछ लोग सोचते हैं कि इसका यौन संबंध है। अन्य नहीं करते।

लेकिन निश्चित रूप से पाठ को समझने के लिए, किसी को यह समझना होगा कि उस संदर्भ का क्या मतलब है। या रूथ अध्याय 4 में पाए गए एक शब्द के सामान्य अंग्रेजी अनुवाद का उपयोग करने के लिए, एक रिश्तेदार उद्धारक क्या है? स्वजन मुक्तिदाता क्या है? इसका क्या महत्व है? इजराइली लोगों के इतिहास और संस्कृति में किसी की क्या भूमिका है? और यह रूथ अध्याय 4 की हमारी व्याख्या पर कैसे प्रकाश डालता है? और फिर, हम उदाहरण दे सकते हैं, अन्य पुराने नियम के ग्रंथों से कई उदाहरण, विशेष रूप से कथात्मक, जो फिर से ऐतिहासिक व्यक्तियों या घटनाओं या स्थानों को संदर्भित करते हैं। यहां तक कि कभी-कभी भौगोलिक संदर्भ भी शामिल किए जा सकते हैं।

या सांस्कृतिक मूल्यों या काम करने के तरीकों का संदर्भ जो फिर से हमारे लिए बहुत विदेशी हो सकते हैं या हमसे बहुत अलग हो सकते हैं, लेकिन हमें पाठ को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखने के लिए विचार करने की आवश्यकता है। नए नियम से कुछ उदाहरण देने के लिए। एक दिलचस्प पाठ, जब हम पाठ के इतिहास पर विचार करते हैं।

तभी हम लेखकत्व और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और पाठक कौन थे, के बारे में प्रश्न पूछना शुरू करते हैं। ऐसी कौन सी परिस्थिति थी जिसने एक पाठ को जन्म दिया। न्यू टेस्टामेंट में कुलुस्सियों की पुस्तक कई दिलचस्प उदाहरण पेश करती है।

उदाहरण के लिए, कोलोसियन्स उन पुस्तकों में से एक है जहां पुस्तक के लेखकत्व पर वास्तव में सवाल उठाया गया है। और जबकि मैं छद्मनाम यानी किसी और के नाम पर लिखने के मुद्दे पर बहुत अधिक समय बर्बाद नहीं करना चाहता। कुछ लोग जो नए नियम के दस्तावेजों को ऐतिहासिक, आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं, वे सुझाव देंगे कि बाइबिल पाठ में छद्मनाम एक वैध घटना थी।

यानी, पहली सदी में छद्म नाम लिखना लेखन का एक आम तरीका था। और बाइबिल के लेखक उस दृष्टिकोण का पालन करना भी चुन सकते हैं। इसलिए कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि कुलुस्सियों को स्वयं पॉल ने नहीं लिखा था, बल्कि शायद पॉल के बाद के शिष्य ने लिखा था।

जो बस पॉलीन परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। कौन लिख रहा है शायद पॉल अगर मौजूद होता तो क्या लिखता। और इसलिए पॉल के नाम पर लिख रहा हूँ।

हालाँकि, मुझे लगता है कि अन्य लोगों ने यह पुख्ता मामला पेश किया है कि पॉल वास्तव में लेखक थे। कुलुस्सियों की पुस्तक में कुछ भी नहीं है, चाहे उसमें से कुछ पॉल की अन्य पुस्तकों से भिन्न क्यों न हो। कुलुस्सियों की पुस्तक में वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे पॉल नहीं लिख सका हो।

और इसलिए अधिकांश इंजील विद्वान कुलुस्सियों के भीतर लेखकत्व के श्रेय को स्वीकार करेंगे कि वास्तव में पॉल लेखक हैं। यह निर्धारित करना अधिक कठिन है कि वह पृष्ठभूमि या स्थिति या संकट जिसने पॉल द्वारा कुलुस्सियों की पुस्तक के लेखन का कारण बना। पाठक कौन थे और किन परिस्थितियों ने उन्हें घेर लिया? हम कोलोसे शहर और लाइकस घाटी में इसकी स्थिति के बारे में थोड़ा-बहुत जानते हैं।

आधुनिक तुर्की के पश्चिमी भाग में। शहर के बारे में हम जो बातें जानते हैं उनमें से एक यह है कि यह उन सबसे कम महत्वपूर्ण शहरों में से एक था जिसे पॉल ने संभवतः पत्र लिखा था। हम यह भी जानते हैं कि पॉल ने स्पष्ट रूप से कुलुस्से में चर्च की स्थापना स्वयं नहीं की थी।

लेकिन यह पॉल द्वारा किसी चर्च को लिखने के दुर्लभ उदाहरणों में से एक है जिसके बारे में उसे प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं था। जहां तक वास्तव में शहर में चर्च की स्थापना का सवाल है। लेकिन अधिक कठिन यह निर्धारित करना है कि पॉल शहर को पत्र क्यों लिख रहा है? किस कठिनाई या किस परिस्थिति ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया? यह स्वीकार करते हुए कि अधिकांश पत्र यूं ही हवा में नहीं लिखे गए थे।

लेकिन वे थे जिन्हें विद्वान अक्सर यदा-कदा कहते हैं। जब हम शैली की आलोचना और पत्र की साहित्यिक शैली को देखेंगे तो हम इस बारे में अधिक बात करेंगे। अधिकांश पत्र वे थे जिन्हें सामयिक कहा जाता है।

अर्थात् वे बहुत विशिष्ट अवसरों या बहुत विशिष्ट परिस्थितियों की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हुए थे। तो कोलोस्से जैसे अक्षर को समझने में। हमें न केवल लेखक के बारे में कुछ समझना होगा और शायद शहर और क्षेत्र के बारे में भी थोड़ा-बहुत समझना होगा।

लेकिन हमें यह भी समझने की जरूरत है कि पाठक कौन हैं और सबसे अधिक संभावना क्या स्थिति या समस्या या मुद्दा थी। इसके कारण पॉल को बैठकर यह पत्र लिखना पड़ा। और कुलुस्सियों के साथ इस बात पर काफ़ी बहस चल रही है कि वह स्थिति क्या रही होगी।

और मुख्य मुद्दों में से एक पॉल के कुछ अन्य पत्रों की तरह है, उदाहरण के लिए गैलाटियन्स। और शायद उनके कुछ अन्य पत्र भी। और कुछ अन्य नए नियम के दस्तावेज़ जैसे 2 पतरस या यहूदा या फिर 1 तीमुथियुस का पॉल का पत्र।

जो स्पष्टतः किसी प्रकार की पथभ्रष्ट या झूठी शिक्षा के प्रत्युत्तर में लिखे गए थे। वह या तो घुसपैठ कर चुका था या चर्च में घुसपैठ करना शुरू कर रहा था या चर्च में घुसपैठ करने का खतरा था। क्या हमें कुलुस्सियों को अक्षरों के उस समूह में शामिल करना चाहिए? क्या हमें कुलुस्सियों को किसी प्रकार की झूठी शिक्षा की प्रतिक्रिया के रूप में देखना चाहिए, यह पहला प्रश्न है।

आरंभ में कुछ मुट्टी भर दुभाषिए और नए नियम के दुभाषिए थे। उनका मानना था कि कुलुस्सियों को किसी विशिष्ट संकट के जवाब में नहीं लिखा गया था। कुलुस्सियों को लिखे पॉल के पत्र के पीछे कोई विशिष्ट झूठी शिक्षा नहीं थी।

इसने पुस्तक के लेखन को जन्म दिया। लेकिन इसके बजाय पॉल शायद कुछ सामान्य दबावों और सामान्य परिस्थितियों को संबोधित कर रहा था जिनका ईसाइयों और कुलुस्से ने सामना

किया था। हालाँकि, मुझे लगता है कि यह आज न्यू टेस्टामेंट के विद्वानों और न्यू टेस्टामेंट के छात्रों के बीच अधिक लोकप्रिय है।

यह देखने के लिए कि कुलुस्सियों को वास्तव में किसी प्रकार की झूठी शिक्षा के जवाब में लिखा गया था। और आमतौर पर ऐसा माना जाने का कारण मुख्य रूप से उन कुछ बातों पर आधारित है जो पॉल ने पुस्तक के दूसरे अध्याय में कहा है। उदाहरण के लिए अध्याय 2 और पद 8 में पॉल कहता है कि इस बात का ध्यान रखो कि कोई तुम्हें खोखले और भ्रामक दर्शन के द्वारा बंदी न बना ले।

जो ईसा मसीह की बजाय मानवीय परंपरा और दुनिया के बुनियादी सिद्धांतों पर निर्भर करता है। तो ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल इस संभावना के प्रति चेतावनी दे रहा है कि कुछ लोग होंगे या शायद कुछ पहले से ही इस खोखले द्वारा गुमराह और धोखा दिए गए हैं और इस खोखले और भ्रामक दर्शन द्वारा बंदी बना लिए गए हैं। लेकिन और भी विशेष रूप से जब आप पद 16 पर पहुँचते हैं।

अध्याय 2 के छंद 16 से शुरू करते हुए आपको एक खंड मिलता है जिसके बारे में बहुत से लोग आश्चर्य हैं कि एक निश्चित पथभ्रष्ट या झूठी शिक्षा का पता चलता है जिसका पॉल जवाब दे सकता है। उन्हें इस बात की चिंता है कि उनके कुछ पाठक पहले ही या शायद ऐसा करने के लिए प्रलोभित हो चुके हैं। तो श्लोक 16 से शुरू करें।

इसलिये तुम जो खाते-पीते हो, या धार्मिक उत्सव, नये चाँद के उत्सव, या विश्रामदिन के विषय में किसी को तुम पर दोष न लगाने दो। ये आने वाली चीज़ों की छाया हैं। हालाँकि वास्तविकता मसीह में पाई जाती है।

जो कोई झूठी नम्रता और स्वर्गदूतों की पूजा में प्रसन्न होता है, उसे पुरस्कार से अयोग्य न ठहराने दें। ऐसा व्यक्ति जो कुछ उसने देखा है उसके बारे में बहुत विस्तार से बताता है और उसका आध्यात्मिक मन उसे बेकार की धारणाओं से भर देता है। उसने उस सिर से संबंध खो दिया है

जिससे पूरा शरीर अपने स्नायुबंधन और नसों द्वारा समर्थित और एक साथ रहता था, जैसे-जैसे भगवान इसे विकसित करता है, बढ़ता जाता है।

चूँकि आप दुनिया के बुनियादी सिद्धांतों के लिए मसीह के साथ मर गए। यद्यपि आप अभी भी इसके सदस्य हैं फिर भी आप इसके नियमों का पालन क्यों करते हैं? न संभालें, न चखें, न छुएं। ये सभी उपयोग के साथ नष्ट होने के लिए नियत हैं।

क्योंकि वे मानवीय आदेशों और शिक्षाओं पर आधारित हैं। इस तरह के नियम वास्तव में उनकी स्व-आरोपित पूजा के साथ ज्ञान का आभास देते हैं। उनकी झूठी विनम्रता और शरीर के प्रति कठोर व्यवहार।

लेकिन कामुक भोगों पर लगाम लगाने में उनका कोई महत्व नहीं है। और जो प्रश्न मैं बस यही पूछूंगा कि क्या आपको ऐसा लग रहा है जैसे पॉल किसी विशिष्ट समस्या का समाधान कर रहा है? अर्थात् एक विशिष्ट शिक्षण। सुसमाचार से किसी प्रकार की विचलित शिक्षा जो कुलुस्सियों को घोषित की गई थी।

अब उसे डर है कि कहीं वह उसकी जगह न ले ले या कहीं उसे एक तरफ धकेलना न शुरू कर दे। कम से कम जब मैं इसे पढ़ूंगा तो मैं सकारात्मक निष्कर्ष निकालूंगा। मुझे लगता है कि यह पाठ विशेष रूप से प्रकट करता है कि पॉल एक विशिष्ट समस्या का जवाब दे रहा है।

शायद यह उतनी गंभीर समस्या नहीं है, उदाहरण के लिए गैलाटियन्स में। हो सकता है कि इसका असर अब तक लोगों के एक बड़े समूह पर न पड़ा हो। शायद यह शिक्षा चर्च में प्रचार करने या घुसपैठ करने की कोशिश भी नहीं कर रही है।

लेकिन शायद इसका अस्तित्व ही कुछ कुलुस्सियों के लिए खतरा या प्रलोभन है, पॉल को संदेह है। मुझे यकीन नहीं है। लेकिन जैसे ही मैंने अध्याय 2 पढ़ा, मैं नए नियम के उन छात्रों का पक्ष लूंगा जो सोचते हैं कि पॉल एक विशिष्ट झूठी शिक्षा का जवाब दे रहा है।

जिस प्रश्न का उत्तर देना शायद और भी कठिन है वह यह है कि इस शिक्षण की प्रकृति क्या है? यह कौन सी शिक्षा थी जिसका पौलुस प्रत्युत्तर दे रहा था? और दिलचस्प बात यह है कि आज भी यह सवाल सुलझ नहीं पाया है. जब आप सभी प्रस्तावों को एक समय में एक विद्वान को देखते हैं। यह शायद अब उससे भी अधिक है।

लेकिन नए नियम के एक विद्वान ने शुरू में ही कहा था कि ये शिक्षक कौन थे, इसके लिए कम से कम 40 प्रस्ताव थे। इससे हमें यह संकेत मिल सकता है कि हमें शिक्षण की प्रकृति का निर्धारण करने में कोई आशा नहीं है। अगर कोई और सहमत नहीं हो सकता.

लेकिन उदाहरण के लिए बहुत पहले से ही कुछ लोगों ने सोचा था कि पॉल ज्ञानवाद का जवाब दे रहा था। हालाँकि, क्योंकि ज्ञानवाद दूसरी शताब्दी तक धर्म में सोच की एक पूर्ण विकसित प्रणाली नहीं बन पाया था। बहुतों ने उसे छोड़ दिया है।

या कम से कम कुछ लोग कहेंगे कि पॉल उन मुद्दों और विश्वासों का जवाब दे रहा था जो बाद में उभरे और पूर्ण विकसित ज्ञानवाद में बदल गए। अन्य लोगों ने सुझाव दिया है कि पॉल जिस शिक्षण को संबोधित कर रहे थे उसमें स्टोइज़िज्म जैसे अन्य धार्मिक विश्वास या आंदोलन मुख्य समस्या थी। या अन्य बुतपरस्त धार्मिक मान्यताएँ।

लेकिन कुछ स्पष्ट संदर्भों के कारण कुछ लोग इससे दूर हो गए हैं। स्पष्ट यहूदी संदर्भ. श्लोक 16 में मैंने जो श्लोक पढ़ा है उनमें से एक पर ध्यान दें।

इसलिए आप जो खाते या पीते हैं उसके आधार पर किसी को अपना मूल्यांकन न करने दें। या धार्मिक त्योहारों के संबंध में अमावस्या उत्सव या सब्त के दिन। विशेषकर सब्त के दिन का सन्दर्भ।

और तथ्य यह है कि पहले अध्याय 2 में पॉल खतना का उल्लेख करता है। इससे पता चलता है कि यह जो भी आंदोलन है इसमें कुछ यहूदी तत्व हैं। तो कुछ वास्तव में कुलुस्सियों के पीछे छिपी शिक्षा के लिए अधिक सामान्य स्पष्टीकरणों में से एक लेकर आए हैं।

पुनः जब हम पुस्तक के पीछे की ऐतिहासिक स्थिति का पुनर्निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं। सबसे आम प्रस्तावों में से एक यह है कि पॉल किसी प्रकार के समन्वयवादी धार्मिक विश्वास का जवाब दे रहा है। अर्थात् यह अन्य बुतपरस्त धार्मिक मान्यताओं के साथ यहूदी तत्वों का एक संयोजन है।

या शायद लोक धार्मिक मान्यताएँ। इसके अलावा इसमें ईसा मसीह पर जोर दिया गया है। उदाहरण के लिए वह खंड जहां लेखक ने कहा कि इस व्यक्ति का सिर से संबंध टूट गया है।

वह यीशु मसीह है, जिस से सारा शरीर एक साथ बंधा हुआ बढ़ता है। जैसे परमेश्वर इसे बढ़ने देता है। तो दूसरा परिणाम यह है कि अक्सर इस यहूदी स्लैश बुतपरस्त धार्मिक विश्वास का सुझाव दिया जाता है।

या यहूदी और ग्रीको-रोमन विश्वास के समन्वय का एक प्रकार। या लोक धार्मिक मान्यताएँ वास्तव में ईसा मसीह के व्यक्तित्व का अवमूल्यन और अपमान कर रही हैं। इसीलिए पॉल इस पुस्तक में यीशु मसीह की पर्याप्तता पर जोर देता है।

तो ये कुछ ऐसे प्रस्ताव हैं जिनमें सबसे आम यहूदी और ग्रीको-रोमन धार्मिक मान्यताओं के बीच समन्वय या संयोजन है। फिर से ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को फिर से बनाने की कोशिश में। कुलुस्सियों के पाठ के पीछे का इतिहास।

हालाँकि एक और संभावित प्रस्ताव जो मैं सुझाऊंगा। और एक बात जिसे मैंने वास्तव में कुलुस्सियों की पृष्ठभूमि पर हाल के कई अध्ययनों में पकड़ते हुए देखा है। क्या इस पुस्तक में यही यहूदी सन्दर्भ हैं।

खतना का संदर्भ पहले अध्याय 2 में था। और अब इस पुस्तक में यहूदी संदर्भ हैं। नये चंद्रमाओं और विश्रामदिनों का संदर्भ। और वैसे दिलचस्प बात यह है कि यह संदर्भ अमावस्या और सब्त के त्योहारों का है।

वह तीन गुना वर्गीकरण या वाक्यांश अन्य पुराने नियम के ग्रंथों में पाया जाता है। इसलिए मैं इस शिक्षा के बारे में सोचता हूं कि विशेष रूप से सब्बाथ का संदर्भ यहूदी स्वभाव के लिए एक मृत उपहार है। यह सब बताता है कि संभवतः यह शिक्षा किसी प्रकार का यहूदी धर्म है।

और मेरे विचार से पहली शताब्दी के यहूदी धर्म से बाहर देखने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस शिक्षण के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करने के रूप में जिसे पॉल संबोधित कर रहा है। लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि पहली शताब्दी में यहूदी धर्म काफी विविध था।

ताकि हमें यह सोचने की जरूरत न पड़े कि पौलुस यहूदी धर्म है। पॉल कुलुस्सियों में जिस यहूदी शिक्षा को संबोधित कर रहा है। यह आवश्यक रूप से यहूदी धर्म के बिल्कुल उसी प्रकार का है जिसे वह गलातियों की पुस्तक में संबोधित कर रहा है।

वास्तव में हम ऐसी कई विशेषताएं देखते हैं जो उससे बाहर की प्रतीत होती हैं। विशेष रूप से श्लोक 18 का संदर्भ। जो कोई झूठी विनम्रता और स्वर्गदूतों की पूजा में प्रसन्न होता है, उसे पुरस्कार से अयोग्य न ठहराएं।

ऐसा व्यक्ति जो कुछ उसने देखा है उसके बारे में बहुत विस्तार से बताता है। किसी प्रकार के दूरदर्शी अनुभव या किसी प्रकार के रहस्यमय अनुभव का सुझाव देना। आपको गैलाटियन्स में उस तरह की भाषा नहीं मिलती जो यहूदी धर्म की विशेषता बताती है जिसे पॉल संबोधित कर रहा है।

लेकिन पहचानने वाली पहली बात यह है कि यहूदी धर्म विविध था। इसलिए हमें यहां पॉल को उसी प्रकार के यहूदी धर्म को संबोधित करते हुए देखने की आवश्यकता नहीं है। जैसा कि वह

गलातियों या रोमियों या यहां तक कि फिलिप्पियों अध्याय 3 में भी रहा होगा। जहां वह यहूदी धर्म को भी संबोधित करता है।

इसके बजाय क्या यह संभव है कि पॉल एक ऐसे यहूदी धर्म को संबोधित कर रहा है जो अधिक सर्वनाशकारी प्रकार के यहूदी धर्म के साथ फिट हो सकता है। उदाहरण के लिए, यह यहूदी धर्म का वह प्रकार है जिसने सर्वनाश उत्पन्न किया। डैनियल और रहस्योद्घाटन के समान पुस्तकें।

हमारे पास सर्वनाश की पूरी श्रृंखला उपलब्ध है। हमारे पास उनका अंग्रेजी अनुवाद है। पुराने और नए नियम के बाहर सर्वनाश।

यह मूल रूप से किसी के दूरदर्शी अनुभव को दर्ज करता है। और अक्सर उस दूरदर्शी अनुभव में पुराने नियम के कानून का कड़ाई से पालन शामिल होता था। उदाहरण के लिए कुछ खाद्य पदार्थों से परहेज करना।

दूरदर्शी अनुभव की तैयारी में उपवास। जैसा कि मैंने पहले ही श्लोक 16 में उल्लेख किया है। यह नए त्योहारों, नए चंद्रमाओं और सब्बाथों का उल्लेख है।

पूरे पुराने नियम में कई बार होता है। इसलिए वास्तव में यहूदी धर्म से बाहर देखने की कोई आवश्यकता नहीं है। शायद यहूदी धर्म का एक रहस्यमय या सर्वनाशकारी प्रकार।

यह श्लोक 18 में स्वर्गदूतों की पूजा के संदर्भ का कारण होगा। एक विशेष प्रकार के यहूदी धर्म को अक्सर मर्कबा यहूदी धर्म कहा जाता है। दूरदर्शी अनुभव के लिए जाना जाता है जहां दूरदर्शी स्वर्ग से चढ़ता है।

और अक्सर लक्ष्य अंतिम स्वर्ग तक पहुंचना होता है। और अक्सर विभिन्न स्वर्गों में देवदूत प्राणी होते हैं। और लक्ष्य स्वर्गदूतों के साथ आराधना करना है।

या अक्सर देवदूत कभी-कभी पूजा की वस्तु हो सकते हैं। लेकिन क्या यह संभव है कि इस प्रकार का यहूदी धर्म उस शिक्षा के लिए जिम्मेदार हो जिसे पॉल संबोधित कर रहा है। या और भी अधिक विशिष्ट होने के लिए.

वह वाक्यांश अमावस्या, त्यौहार और विश्रामदिन। मृत सागर स्कॉल में भी कुछ बार पाया गया है। और इसके अलावा दिलचस्प बात यह है।

श्लोक 16. अधिकांश लोग मानते हैं कि यह संभवतः भोजन और पेय के बारे में पुराने नियम के निषेधों का उल्लेख कर रहा है। हालाँकि पेय के विरुद्ध विशिष्ट निषेध ढूँढना बहुत कठिन है।

हालाँकि मृत सागर स्कॉल में क्या दिलचस्प है। जब कोई सदस्य बनना चाहता था. व्यक्ति को अक्सर कुछ खाने-पीने से परहेज करना पड़ता था।

जैसे ही वे न्याय की अवधि से गुजरे। के अनुसार उनका मूल्यांकन किया गया। खाने-पीने के हिसाब से आंके जाने का जिक्र.

ऐसा कुछ प्रतिबिंबित हो सकता है. वह कुमरान समुदाय में आरंभ होता है। जिसके बारे में हमने पहले बात की थी.

अक्सर निर्णय की अवधि से गुजरना पड़ा। जहां उन्हें खाने-पीने से परहेज करना पड़ता था. केवल तभी जब वे उस अवधि को पार कर गए।

क्या उन्हें खाने-पीने में हिस्सा लेने की इजाजत थी. इसके अलावा यह दिलचस्प है कि हमारे पास कई पाठ हैं। यह वही हो सकता है जो हम श्लोक 18 में पाते हैं।

किसी ऐसे व्यक्ति को मत छोड़ो जो झूठी विनम्रता में प्रसन्न होता है। और स्वर्गदूतों की उपासना तुम्हें अयोग्य ठहराती है। ऐसा व्यक्ति अपने द्वारा देखी गई बातों के बारे में विस्तार से बताता है।

हमारे पास मृत सागर स्क्रॉल से कई ग्रंथ हैं। सब्बाथ बलिदान के गीत कहा जाता है। और वे क्या थे।

वे क्रमिक सब्ब के दिन होने वाली आराधना के विवरण थे। और जो दिलचस्प है वह उनमें से एक जोड़े में है। स्वर्गीय मंदिर का विस्तृत वर्णन मिलता है।

और ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रंथों को पढ़ने का एक लक्ष्य यह भी है। क्या वह मण्डली ही समुदाय था? स्वर्गदूतों से जुड़ने का लगभग एक रहस्यमय अनुभव से गुजरूँगा।

अपने स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में भगवान की पूजा करने में। एक और दिलचस्प पाठ वह है जिसे 4Q491 कहा जाता है। और 4Q का मूलतः मतलब चौथी गुफा है।

आपको मृत सागर स्क्रॉल की कहानी याद है। विभिन्न गुफाओं में पाए गए और गुफाओं को क्रमांकित किया गया। 491 में गुफा संख्या 4 में।

यह केवल दस्तावेज़ की संख्या है जो इसे दूसरों से अलग करती है। 4Q491 नामक दस्तावेज़ों में से एक में। एक इंसान का हिसाब है।

जाहिरा तौर पर शायद एक पुजारी. जो स्वर्ग पर चढ़ गया है. और स्वर्गीय लोकों को देखा।

एक देवदूत और अब वह धरती पर वापस आता है। और जो कुछ उसने अनुभव किया है उस पर घमंड करता है। और उसने क्या देखा है।

तो क्या मृत सागर स्क्रॉल करता है। कुलुस्सियों में जो चल रहा है उसके पीछे झूठ बोलो। कहना असंभव है।

लेकिन क्या यह संभव है कि पॉल के मन में भी इसी प्रकार का यहूदी धर्म हो। यह सर्वनाशकारी प्रकार के यहूदी धर्म में पाया जाता है। इससे स्वर्ग के उनके दूरदर्शी अनुभवों के आधार पर सर्वनाश उत्पन्न हुआ।

या पॉल यहूदी धर्म को संबोधित कर रहा है जो इसके समान है। या शायद मृत सागर समुदाय की एक शाखा या उसके समान। कुमरान समुदाय.

इससे पता चलेगा कि पॉल क्या संबोधित कर रहा है। यह भी दिलचस्प है कि तप. कुछ ने कहा है कि अच्छी तरह से तप पर ध्यान दो।

न संभालें, न चखें, न छुएं। और वे इसका श्रेय किसी ग्नोस्टिक या तपस्वी या ग्रीको रोमन प्रकार के धर्म को देते हैं। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि मृत सागर स्कॉल।

कुमरान समुदाय. उनके लिए फरीसी कानून के पालन में भी पर्याप्त सख्त नहीं थे। ताकि कुछ यहूदी समूहों का कानून के प्रति रवैया।

जैसे कि कुमरान समुदाय. अत्यधिक तपस्वी के रूप में देखा जा सकता है। तो क्या ये संभव है कि झूठी शिक्षा.

पौलुस के मन में जो पथभ्रष्ट शिक्षा है। कुलुस्सियों की पुस्तक के पीछे जिसे पॉल संबोधित कर रहा है। क्या यहूदी धर्म संभवतः सर्वनाशकारी प्रकार का यहूदी धर्म है।

या यहूदी धर्म का एक और रहस्यमय प्रकार। जैसा कि कुमरान समुदाय में पाया जाता है। और यह स्वयं ही पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

ऐतिहासिक संदर्भ और पृष्ठभूमि. पॉल के कुलुस्सियों के लेखन के लिए। अगर ऐसा भी है.

सबसे अधिक सम्भावना यह है कि इस झूठी शिक्षा ने मसीह का अवमूल्यन नहीं किया। यह झूठी शिक्षा है कि यहूदी धर्म गलातियों से भिन्न है। वह यहूदी धर्म कोई मसीहाई धर्म नहीं था या ईसाई यहूदी धर्म होने का दावा नहीं करता था।

लेकिन इसके बजाय कुलुस्सियों में ईसाई धर्म पर जोर दिया गया। पॉल की अपनी प्रतिक्रिया है। यह झूठी शिक्षा के प्रति उनकी प्रतिक्रिया नहीं है।

यह पॉल का अपना सुधार है। इस यहूदी धर्म का मुकाबला करने के लिए, यह तपस्वी को कानून का पालन करने पर जोर देता है।

और दूरदर्शी अनुभव, और देवदूतों की पूजा, इसके जवाब में सुधार यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर पॉल का जोर है।

शायद पॉल ने इस यहूदी धर्म को देखा था। इस शिक्षण में पूरकता का खतरा है। और प्रतिस्थापन,

यहाँ तक कि मसीह का स्थान लेना भी। मसीह में जीवन, और पॉल प्रदर्शित करना चाहता है,

नहीं, यह यहूदी धर्म प्रदान नहीं कर सकता। मसीह में जीवन का कोई विकल्प प्रदान नहीं कर सकता। भोगों पर विजय पाने का एक ही उपाय है।

कामुक भोग को रोकने का एकमात्र उपाय। जैसे ही अध्याय 2 समाप्त होता है। यह यहूदी धर्म की पेशकश नहीं है।

परन्तु केवल मसीह में जीवन। तो फिर अध्याय 3 चलता है। तो इसलिये तुम मसीह के साथ पाले गये हो।

अपना हृदय ऊपर की बातों पर लगाओ। उपरोक्त चीज़ों की तलाश करें, धरती पर मौजूद चीज़ें नहीं।

पॉल की अपनी प्रतिक्रिया है. मसीह में जीवन ही एकमात्र विकल्प है। और यह यहूदी धर्म संभवतः कुलुस्सियों के पाठकों को क्या पेशकश कर रहा है, इसकी एकमात्र प्रतिक्रिया।

तो फिर से तरह-तरह के प्रस्ताव दिए। पूर्ण निश्चितता संभवतः हमसे दूर रहेगी। लेकिन साथ ही कुछ समझ विकसित करना भी जरूरी है।

वह कौन सी शिक्षा थी जिसे पॉल कुलुस्सियों जैसी पुस्तक में संबोधित कर रहे होंगे। और यह हमारे पाठ को पढ़ने और समझने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है। बस कुछ उदाहरण देने के लिए.

ऐतिहासिक आलोचना और ऐतिहासिक दृष्टिकोण के दूसरे पहलू से। पाठ में यही इतिहास है। वह पाठ के भीतर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों की जांच कर रहा है।

और ये वे संदर्भ हैं जिन्हें अक्सर लेखक और पाठकों के बीच साझा समझ के रूप में संदर्भित किया जाता है। और हमें उनकी जांच करने और उन पर प्रभाव डालने की जरूरत है। यह समझने के लिए कि यह बाइबिल पाठ की व्याख्या करने में कैसे योगदान दे सकता है।

बस कुछ संक्षिप्त उदाहरण देने के लिए। नए नियम के दो खंडों से जिनका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं। उनमें से एक का महत्व कम से कम दो स्थानों पर पाया जाता है।

लेकिन अन्य जगह भी . लेकिन दो विशेष रूप से जिन्हें हमने छुआ है। कुएं पर यीशु की सामरी स्त्री से मुठभेड़।

और फिर अच्छे सामरी का दृष्टान्त। हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि एक सामरी के इस संदर्भ की पृष्ठभूमि को समझने में विफलता। असल में गलतफ़हमी पैदा हो सकती है.

और यह कि हमारे पास कम से कम 20वीं और 21वीं सदी की अमेरिकी संस्कृति है। हमने सामरी को पालतू बना लिया है। इसलिए मुझे डर है कि जब हम सामरी लेबल पढ़ते हैं।

हम बाइबिल के पाठ को उस तरह समझने में असफल हो सकते हैं जैसा लेखक ने चाहा था। और जैसा कि मूल पाठकों ने इसे इसके ऐतिहासिक संदर्भ में समझा होगा। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि जब इज़राइल को निर्वासन में ले जाया गया था।

इसका परिणाम यह हुआ कि वास्तव में कुछ इस्राएलियों को सामरिया में रहने की अनुमति दे दी गई। जो उस समय इज़राइल की राजधानी थी। तुम इस्राएल और इस्राएल जाति को स्मरण करो।

इस्राएल का राज्य उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य में विभाजित था। और उत्तरी राज्य की राजधानी सामरिया थी। दक्षिणी राज्य यहूदा।

इसकी राजधानी यरूशलेम. कुछ इस्राएलियों को सामरिया में रहने की अनुमति दी गई। और जो परदेशी उन्हें बन्धुवाई में ले गए, उन्होंने सचमुच नगर पर अधिकार कर लिया।

और वहां रह गए इस्राएलियों से मेल-मिलाप किया। यह उत्पाद अधिकांश यहूदियों द्वारा आधी नस्ल के रूप में देखा गया था। या वे जो विशुद्ध रूप से यहूदी नहीं थे।

इसके अलावा केवल इतना ही नहीं बल्कि संघर्ष का एक लंबा इतिहास था। उस घटना से परे भी संघर्ष का एक इतिहास था। अधिकांश यहूदियों और सामरियों के बीच।

इसके परिणामस्वरूप कई खराब रिश्ते बने। और सामरियों और अन्य यहूदियों के बीच कोई प्रेम नहीं खो रहा है। ताकि जब यीशु किसी सामरी स्त्री के साथ बैठें।

न केवल तथ्य यह है कि वह एक महिला थी बल्कि मुख्य रूप से एक सामरी थी। बल्कि चौंकाने वाला होता. जब अच्छे सामरी के दृष्टान्त का नायक सामरी हो।

यह इतिहास वनवास के दिनों तक जाता है। और अन्य यहूदियों और सामरियों के बीच संघर्ष और बुरे संबंधों का इतिहास। जिस प्रकार यह दृष्टांत पढ़ा होगा, उसी प्रकार सूचित किया होगा।

एक सामरी का होना चौंकाने वाला होता। शायद आज निकटतम सादृश्य एड्स से पीड़ित समलैंगिक का हो सकता है। दृष्टांत और कहानी का नायक होना।

और ऐतिहासिक रूप से वह सादृश्य संभवतः बदल जाएगा। एक और उदाहरण ल्यूक अध्याय 11 में पाया जाता है। फिर से उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत।

हम पहले ही इसका उल्लेख कर चुके हैं। लेकिन सबसे पहले कुछ ऐतिहासिक संदर्भ जिन्हें अनदेखा किया जा सकता है। यह दिलचस्प है कि इस दृष्टांत की शुरुआत बेटे द्वारा पिता से विरासत में अपना हिस्सा मांगने से होती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखते हुए कई टिप्पणियों ने यह सुझाव दिया है। यह उस बेटे के समान होगा जो अपने पिता के मरने की कामना करता है। क्योंकि पिता की मृत्यु पर ही पुत्र को उत्तराधिकार प्राप्त होता था।

तो कम से कम ये तो पिता का घोर अपमान होता। जो संभवतः समुदाय के भीतर एक धनी और सम्मानित व्यक्ति था। दूसरा दिलचस्प संदर्भ यह है कि पिता बाहर भागता है और बेटे का स्वागत करता है।

पहली सदी में ऐसा बिल्कुल नहीं किया गया था। शायद एक पिता के लिए दौड़ना। लेकिन विशेष रूप से बाहर भागकर उस बेटे का अभिवादन करना जिसने उसके तरीके से उसका अपमान किया था।

अत्यंत अशोभनीय था। और बेहद अपमानजनक था। इसमें जोड़ने के लिए जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है जब हमने पहले इस दृष्टांत पर चर्चा की थी।

शायद हमें इसे बीच में घटित होने वाली घटना के रूप में नहीं देखना चाहिए। किसी ऐसे खेत में जहां आस-पास कोई पड़ोसी नहीं था। और वे बस मानवता से या एक समुदाय से अलग-थलग थे।

इसके बजाय अगर यह एक सामान्य ग्रामीण गांव में हो रहा है तो क्या होगा? एक मध्य पूर्वी ग्रामीण गाँव। ताकि हर कोई न सिर्फ जान सके कि बेटे ने पिता के साथ क्या किया।

और बेटे ने पिता के साथ कैसा व्यवहार किया। लेकिन अब सब देख रहे हैं। हर कोई जानता था कि बेटा आ रहा है और हर कोई देख रहा है।

और बेटे को देखता है, पिता असम्मानजनक तरीके से बेटे से मिलने के लिए दौड़ता है। अचानक यह न केवल उड़ाऊ पुत्र के बारे में एक दृष्टान्त बन जाता है। लेकिन पिता की विनम्रता के बारे में।

बेटे को स्वीकार करने के लिए पिता किस अशोभनीय और अपमानजनक हद तक गिर सकता है। अब कोई इस दृष्टान्त को पढ़ सकता है और कह सकता है कि ऐसा नहीं होता है। सही दिमाग वाला कोई भी पिता ऐसा नहीं करेगा।

और यह शायद सच था। लेकिन शायद यह दृष्टान्त का कुछ चौंकाने वाला मूल्य है। शायद एक इंसानी पिता ऐसा नहीं करेगा।

लेकिन भगवान ने ठीक यही किया। ताकि दृष्टान्त का मुद्दा केवल उड़ाऊ पुत्र के बारे में न हो। और उसका पश्चाताप और पिता से क्षमा माँगने के लिए लौटना।

लेकिन यह परमपिता परमेश्वर की विनम्रता और अपमान के बारे में भी है। जब भी वह किसी ऐसे व्यक्ति का स्वागत करने के लिए नीचे झुकता है जिसने उसका अपमान किया हो। और उसके साथ पाप और तिरस्कार के द्वारा अपमान का व्यवहार किया।

और जब भी कोई लौटता है। जिसने अपमान किया हो। कोई है जिसने पिता परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

जब भी वे पश्चाताप के लिए लौटते हैं। इस दृष्टान्त में पिता बिल्कुल मानवीय पिता जैसा है। परमेश्वर पिता स्वयं को अपमानित करता है।

और जब वह किसी को वापस स्वीकार करने के लिए नीचे झुकता है तो वह असम्मानजनक व्यवहार करता है। जो पश्चाताप में उसके पास आता है. अक्सर नए नियम और पुराने नियम के पाठ की व्याख्या करने के लिए ऐतिहासिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण।

अक्सर ऐसी अंतर्दृष्टि का पता चलता है जो छूट सकती है। ज्यादा से ज्यादा छूट जायेगी. सबसे बुरी स्थिति में इसका गलत मतलब निकाला जा सकता है और गलत समझा जा सकता है।

जब हम बाइबिल पाठ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने में असफल हो जाते हैं। ऐतिहासिक आलोचनात्मक पद्धति पर दो अंतिम नोट्स। हालाँकि अगले कुछ सत्रों में कार्यप्रणाली और आलोचनाओं की जाँच जारी रहेगी।

वह अभी भी ऐतिहासिक दृष्टिकोण के अंतर्गत आता है। और बाइबिल पाठ के प्रति लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण। पाठ के पीछे जा रहे हैं.

लेकिन दो अन्य अवलोकन ऐतिहासिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण से संबंधित हैं। नंबर एक। हम पहले ही पुराने और नए नियम की व्याख्या के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण के बारे में बता चुके हैं।

सचमुच आवश्यक हैं. क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को छुड़ाने के लिए इतिहास में कार्य किया है। पुराने और नए नियम गवाही देने का दावा करते हैं।

और का रहस्योद्घाटन होना. इतिहास के भीतर भगवान की गतिविधि. अपने लोगों की ओर से परमेश्वर के छुटकारे के ऐतिहासिक कार्य।

वह अंततः यीशु मसीह के मानवीय व्यक्तित्व में चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है। जो अपने लोगों को छुड़ाने के लिए इतिहास में प्रवेश करता है। दुनिया के राजनीतिक और ऐतिहासिक संदर्भ में भगवान मुक्ति दिलाने के लिए आते हैं।

इसलिए अंततः बाइबिल पाठ के साथ न्याय करने के लिए ऐतिहासिक मूल्यांकन वास्तव में आवश्यक है। लेकिन मेरा दूसरा अवलोकन योग्यता के संबंध में है। खतरों में से एक यह है कि हमें अपने ऐतिहासिक पुनर्निर्माण को अपनी व्याख्या का प्राथमिक उद्देश्य न बनाने के प्रति सावधान रहना होगा।

हमने देखा है कि जो प्रेरित है वह बाइबिल का पाठ ही है। पाठ स्वयं ईश्वर के बोलने का उत्पाद है। पाठ स्वयं ईश्वर का वचन है।

तो मेरी व्याख्यात्मक गतिविधि का प्राथमिक ठिकाना। मेरी व्याख्या बाइबिल पाठ ही है। पुनर्निर्मित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं।

हालाँकि, जैसा कि हमने बाइबिल के दस्तावेजों में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देखी है, ऐतिहासिक घटनाओं के ज्ञान को मानते हैं और उस पर निर्भर करते हैं। बाइबिल के पाठ को प्रकाशित करने के लिए घटनाओं और ऐतिहासिक संदर्भों का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण आवश्यक है। लेकिन जैसा कि मैं इसे समझता हूँ, दुभाषिया हमेशा रस्सी पर चलने की भावना से चलता है।

केवल बाइबिल पाठ की व्याख्या करने और पाठ में प्राथमिक खोजने के बीच। पाठ हमारी व्याख्यात्मक गतिविधि का प्राथमिक स्थान है। फिर भी साथ ही उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की अनदेखी नहीं की जा रही है जो इसे उजागर करने में मदद करती है।

लेकिन दूसरी ओर खतरा यह है कि मेरी व्याख्या मुख्य रूप से पृष्ठभूमि में मेरे ऐतिहासिक पुनर्निर्माण की होगी। तो यह बस एक संतुलन की मांग है। बाइबिल का पाठ ही हमारी व्याख्या का प्राथमिक फोकस है।

यह बाइबिल का पाठ ही है जो अपने लोगों के लिए परमेश्वर का वचन है। और यह हमारी व्याख्यात्मक गतिविधि का स्थान है। हालाँकि, साथ ही क्योंकि भगवान का वचन भगवान के कार्यों में निहित है, इसलिए इतिहास में निहित है।

ऐतिहासिक सन्दर्भ को समझना आवश्यक है। पाठ के इतिहास और पाठ में इतिहास का पुनर्निर्माण करना। जिस पाठ की हम व्याख्या करते हैं, उसे उजागर करने और उसका अर्थ समझने में हमारी मदद करना।

फिर मैं जो करना चाहता हूँ वह संक्षेप में एक और विधि, विशेष रूप से वास्तव में विधियों की एक श्रृंखला का परिचय देना है। यह सब ऐतिहासिक आलोचना के व्यापक दायरे में आता है। मेरे मन में जो तीन आलोचनाएँ हैं, हम अगले कुछ सत्रों में उनकी जाँच करेंगे।

आलोचना का स्रोत, रूप और पुनर्लेखन है। पुनः ये ऐतिहासिक आलोचना के व्यापक अनुशासन का हिस्सा हैं। इसमें वे सभी किसी न किसी संबंध में पाठ के पीछे जाने का प्रयास करते हैं।

और पाठ के निर्माण पर ऐतिहासिक प्रभावों के बारे में ऐतिहासिक प्रश्न पूछें। या फिर वे लेखक के बारे में प्रश्न पूछते हैं। और बाइबिल पाठ लिखने में लेखक का इरादा।

और इन तीनों को भी हम विकसित होते देखेंगे। ये तीनों ऐतिहासिक और तार्किक रूप से विकसित होते हैं। स्रोत और रूप आलोचना से.

जिसे हम दोनों मूल रूप से उन स्रोतों या मौखिक रूपों को देखेंगे जो पुराने नए नियम के पीछे हैं। यह मूल रूप से न्यू टेस्टामेंट या ओल्ड टेस्टामेंट के अंतिम रूप में अपना स्थान बना लेता है। या फिर वे सभी लेखक के बारे में प्रश्न पूछते हैं।

और पुनर्लेखन आलोचना फिर थोड़ा और आगे बढ़ जाती है। और पूछता है कि लेखक ने इन स्रोतों या इन व्यक्तिगत रूपों को कैसे लिया है। और उन्हें एक बाइबिल पाठ में एक साथ गूँथ दिया।

पाठ के पीछे छिपे स्रोतों और रूपों को पाठ के अंतिम रूप में लाने के लिए लेखक किस प्रकार उत्तरदायी है? तो उस स्रोत, रूप और संपादन के कारण आलोचना आम तौर पर ऐतिहासिक आलोचना का हिस्सा होती है। यह भी कहना महत्वपूर्ण है कि ये तीनों आज भी पुराने और नए नियम की व्याख्या में जीवित और अच्छी तरह से मौजूद हैं।

वे आम तौर पर व्याख्या के अन्य नए और अधिक आधुनिक तरीकों को पीछे ले गए हैं। ताकि कुछ पाठ्यपुस्तकों में व्याख्याशास्त्र पर या व्याख्या पर चर्चा की जा सके। इन्हें अक्सर नज़रअंदाज कर दिया जाता है या बहुत कम उपचार दिया जाता है।

क्योंकि फिर से उन्हें मूल रूप से नए और अधिक हालिया तरीकों से ग्रहण कर लिया गया है। आइए मैं आपको पहले से परिचित कराना शुरू करता हूँ जो आमतौर पर ऐतिहासिक और तार्किक रूप से सबसे पहले घटित होता है। और वह स्रोत आलोचना है।

मूल रूप से पुराने और नए टेस्टामेंट दोनों में आलोचना का स्रोत है। हालाँकि यह पुराने और नए टेस्टामेंट में थोड़ा अलग तरीके से काम करता है। जहाँ तक यह बात है कि यह किन पुस्तकों को कवर करता है और इसका उपयोग कैसे किया जाता है।

लेकिन पुराने और नए टेस्टामेंट दोनों में स्रोत आलोचना मूल रूप से लिखित पाठ के पीछे जाने का एक प्रयास है। चाहे वह उत्पत्ति हो या पहला और दूसरा इतिहास या मैथ्यू मार्क और ल्यूक। या शायद उदाहरण के लिए पॉल के पत्रों में से एक।

यह लिखित पाठ के पीछे जाने का एक प्रयास है जैसा कि हमारे पास है। विशेष रूप से उन लिखित स्रोतों को उजागर करना जिनका उपयोग लेखक ने पाठ के पीछे किया हो। तो धारणा यह है कि बाइबिल के लेखक लिखित स्रोतों पर निर्भर थे।

और इन्हें पाठ से ही उजागर या पुनर्निर्मित किया जा सकता है। तो स्रोत आलोचना के सुनहरे दिनों में भी, लेकिन आज भी। आप अक्सर तथाकथित लिखित स्रोतों पर चर्चा करने में रुचि पाएंगे ।

हो सकता है कि लेखक के पास पुराने नियम या नए नियम के लेखक ने इसका उपयोग किया हो। कभी-कभी उन स्रोतों का पुनर्निर्माण करना। और शायद कभी-कभी इससे भी आगे बढ़कर यह पूछना कि वह स्रोत कहां से आया? यह किस समुदाय या स्थिति को प्रतिबिंबित करता है? यह मूल रूप से किस स्थिति या मुद्दे को संबोधित करता था? मूल रूप से किस स्थिति ने इसे जन्म दिया आदि।

आदि, लेकिन फिर से पूरे स्रोत पर आलोचना केवल लिखित पाठ के पीछे जाने का एक प्रयास है। और उन स्रोतों के बारे में प्रश्न पूछें जिनका उपयोग किया गया था और जिन्होंने इसे प्रभावित किया होगा।

फिर से हम पहले ही पुराने नए नियम के दो साक्ष्यों को देख चुके हैं। इससे पता चलता है कि स्रोत आलोचना वास्तव में एक वैध उद्यम है। नए नियम और पुराने नियम के लेखक कभी-कभी पहले के स्रोतों पर भरोसा करते थे।

उन स्रोतों का पुनर्निर्माण करना कितना भी कठिन या काल्पनिक क्यों न हो। हमने प्रथम और द्वितीय राजाओं के सन्दर्भ में देखा। इज़राइल की राजशाही के इतिहास के अपने सर्वेक्षण का समापन करते हुए लेखक की कही बातों का बारंबार संदर्भ।

कौन अक्सर कहता है कि क्या ये बातें राजा के इतिहास में नहीं लिखी थीं? या कुछ इस तरह का। जिससे ऐसा लगे कि लेखक किसी स्रोत, किसी ऐतिहासिक स्रोत पर भरोसा कर रहा है। वह अपनी रचना के लिए आकर्षित हुआ है।

या ल्यूक अध्याय 1 और 1 से 4 तक। जहां ल्यूक कहता है कि दूसरों ने मसीह के जीवन का विवरण लिया है या लिखा है। और वास्तव में ईसा मसीह के जीवन से जुड़ी घटनाओं के वृत्तांत के अन्य चश्मदीद गवाह भी हैं। ल्यूक ने अब स्वयं अपना खाता तैयार करने का प्रयास किया है।

इसलिए ल्यूक भी स्वीकार करता है कि वह ईसा मसीह के जीवन से संबंधित मौखिक और लिखित दोनों स्रोतों पर भरोसा कर रहा है। जिसे वह अपने काम में शामिल कर रहे हैं। वह हमें यह नहीं बताता कि वे क्या हैं या वे कहाँ हैं।

जब वह अन्य लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने मसीह के जीवन का विवरण तैयार किया है या लिखा है। क्या वह एक या अधिक अन्य सुसमाचारों का उल्लेख कर रहा है? मैथ्यू या मार्क या शायद ईसा मसीह के जीवन के अन्य संभावित विवरण। किसी भी स्थिति में ऐसा प्रतीत होता है कि ल्यूक को इसके बारे में पता है और अब वह अपनी रचना में उनका उपयोग कर रहा है।

इसलिए स्रोत आलोचना, उस तरह के पाठ के आधार पर, पुनर्निर्माण करने और यह पूछने का प्रयास करती है कि वे कौन से लिखित स्रोत थे जिनका उपयोग नए और पुराने नियम के लेखकों ने अपनी रचना तैयार करने में किया था। और हमारे अगले सत्र में हम पुराने और नए नियम में स्रोत आलोचना पर अधिक विस्तार से गौर करेंगे। यह कैसे काम करता है और व्याख्याशास्त्र में इसके योगदान का क्या महत्व हो सकता है।

और फिर आलोचना के अगले चरण यानी फॉर्म आलोचना की ओर भी बढ़ें। और यह भी कि इसने पुराने और नए नियम की व्याख्या को कैसे प्रभावित किया है।